आशा न छोड़े

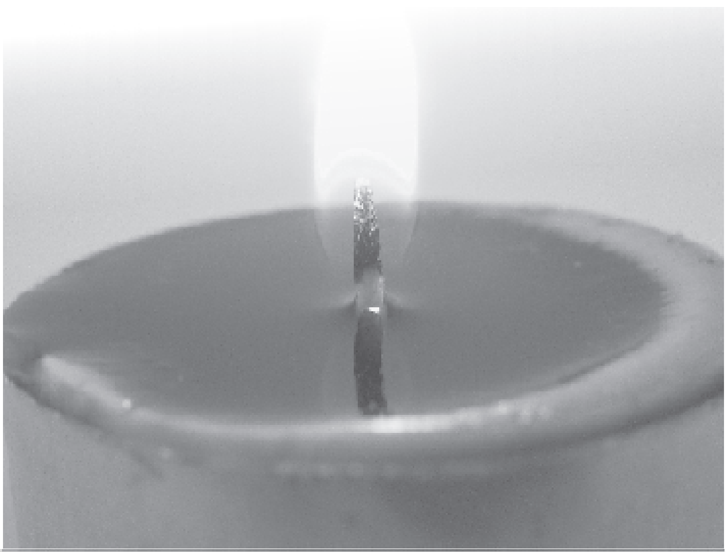

आशीष रायचूर

© आशीष रायचूर, पास्टर
ऑल पीपुल्स चर्च एवं विश्व सुसमाचार सम्पर्क
प्रथम प्रकाशन मुद्रित 2009 जानवरी

प्रबन्ध सम्पादक/मुख्य प्रकाशक : वैलेन्टीना हूबर्ट
सहायक सम्पादक : आरती रेचल यशायाह
अनुवाद एवं प्रूफरीडिंग : सुनील एस. लाल
मुख पृष्ठ एवं ग्राफिक्स डिज़ाइन : करुणा जयरोम, बाईफेथ डिज़ाइन्स

पत्राचार का पताः
ऑल पीपुल्स चर्च एवं विश्व सुसमाचार सम्पर्क
सोभा जेड A 216
जक्कूर, बंगलौर-560064
कर्नाटक, भारत

फोन + 91-80-23544328
ईमेल : contact@apcwo.org
बेबसाइट : www.apcwo.org

निशुल्क वितरण हेतु

इस पुस्तक का निशुल्क वितरण ऑल पीपुल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों के आर्थिक अनुदानों के द्वारा सम्भव हुआ है।

ਆਸ਼ਾ ਨ ਛੋੜੋ

विषय-वस्तु

1. जीवन सदैव आसान नहीं होता 1

2. आशा–हमारे मसीही जीवन का आवश्यक भाग 3

3. आशा का महत्व 5

4. वह परमेश्वर जो आशाहीन परिस्थिति को बदलता है... 7

5. आशाहीन परिस्थितियों में आशा हेतु आधार 11

6. आशाहीन परिस्थिति में मैं क्या करूँ? 16

1

जीवन सदैव आसान नहीं होता

हममें से सभी अपने जीवन की यात्रा बहुत से सपनों, लक्ष्यों, आकांक्षाओं और प्रेरणाओं के साथ आरम्भ करते हैं। बहुत उत्तेजित होकर हम अपने जीवन में काम करने, कहीं पहुँचने और जीवन में कुछ बनने की योजना बनाते हैं। परन्तु मार्ग में हम कहीं न कहीं तूफानों में फँस जाते हैं। जीवन सदैव आसान नहीं होता है। हम प्रायः चाहते हैं कि जीवन एक कहानी की तरह आसान होता। परन्तु ऐसा सदैव होता नहीं है। अवांछनीय चुनौतियाँ, कठिनाईयाँ और परिस्थितियाँ मार्ग में आ जाती हैं। ऐसे समयों में ही ऐसा प्रतीत होता है कि हमारे लक्ष्य और सपने बिखरते जा रहे हैं। कभी- कभी हम अपने आपको ऐसी परिस्थितियों में पाते हैं जो प्रायः आशाहीन लगती हैं। हम आशा छोड़ने लगते हैं। हम सोचते लगते हैं,“ मैं यह कभी नहीं कर पाऊँगा” अथवा “अपने लक्ष्य को पूरा नहीं कर पाऊँगा।” हम निराश होते हैं कि क्या हम कभी अपने लक्ष्यों को पूरा कर पाएंगे।

कभी-कभी जीवन में ऐसे झटके आते हैं और ऐसी परिस्थितियाँ बनती हैं जिनके लिए हम तैयार भी नहीं होते हैं। हम अपने आप को ऐसे मोड़ पर पाते हैं जहाँ से कहीं नहीं जा सकते हैं। आप में से कुछ, जो इस पुस्तक को पढ़ रहे हैं, इस समय आशाहीन परिस्थितियों में हो सकते हैं। यह आपकी नौकरी, व्यवसाय, शिक्षा, घर, विवाह और परिवार की परिस्थिति हो सकती है। जीवन में बहुत कुछ गलत हो चुका है। परन्तु मैं आपको उत्साहित करना चाहता हूँ कि बाइबल का परमेश्वर मृतक को जीवन देने-ऐसी परिस्थितियों को जो मृतक दिखती हैं; जीवन देने में विशेषज्ञ है। वह आशाहीन परिस्थितियों को बदलने में विशेषज्ञ है। आमीन्! यदि वह आपकी ओर है तो आप आशाहीन दशा में भी आशा कर सकते हैं। यद्यपि जब सब कुछ आशाहीन लगे तौभी आप एक विजयी होकर बाहर आ सकते

हैं। सह पुस्तक प्रोत्साहन और हियाव के सरल वचनों को प्रस्तुत करती है ताकि हम आशा न छोड़ें।

आशा रखने का महत्व

आशा रखना बहुत आवश्यक है। 'आशा' से हमारा अर्थ है कि जिस बात की हम अपेक्षा करते, और उसे मानकर चलते हैं, एक इच्छा, स्वप्न अथवा चाह। मसीही जीवन के बहुत से महत्वपूर्ण आयामों में से आशा एक महत्वपूर्ण बात है। बाइबल बताती है कि हमारे मसीही जीवन में तीन बातें आवश्यक हैं–इनमें से एक आशा है।

"पर अब विश्वास, आशा और प्रेम ये तीनों स्थाई हैं, पर इनमें सबसे बड़ा प्रेम है" (1 कुरिन्थियों 13:13)।

बाइबल का परमेश्वर मृतक को जीवन देने–ऐसी परिस्थितियों को जो मृतक दिखती हैं; जीवन देने में विशेषज्ञ है। वह आशाहीन परिस्थितियों को बदलने हेतु विशेषज्ञ है।

2

आशा—हमारे मसीही जीवन का आवश्यक भाग

विश्वासी होने के कारण हम आने वाली बहुत सी बातों की आशा करते हैं।

अनन्त जीवन की आशा

"उस अनन्त जीवन की आशा पर जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने, जो झूठ बोल नहीं सकता सनातन से की है" (तीतुस 1:2)।

हम अनन्त जीवन की आशा करते हैं। यद्यपि अनन्त जीवन कुछ ऐसा है जो हमारी आत्माओं में है, तौभी यह एक भविष्य की आशा भी है।

महिमा की आशा

"जिन पर परमेश्वर ने प्रगट करना चाहा कि उन्हें ज्ञात हो कि अन्यजातियों में उस भेद की महिमा का मूल्य क्या है, और वह यह है कि मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है" (कुलुस्सियों 1:27)।

मसीह जो हममें है वह महिमा की आशा है। आने वाले संसार की आशा, एक ऐसा संसार जो इस वर्तमान संसार से जिसमें हम रहते हैं कहीं बेहतर है। हम परमेश्वर के साथ स्वर्ग में समय बिताने की आशा करते हैं।

उद्धार की आशा

"पर हम जो दिन के हैं, विश्वास और प्रेम की झिलम पहिनकर और उद्धार की आशा का टोप पहिनकर सावधान रहें" (1 थिस्सलुनीकियों 5:8)।

"और यह इसलिये है कि तुम्हारा परखा हुआ विश्वास, जो आग से ताए हुए नाशवान सोने से भी कहीं अधिक बहुमूल्य है, यीशु मसीह के प्रगट होने पर प्रशंसा और महिमा और आदर का कारण ठहरे। उससे तुम बिन देखे प्रेम रखते

हो, और अब तो उस पर बिन देखे भी विश्वास करके ऐसे आनन्दित और मगन होते हो जो वर्णन से बाहर और महिमा से भरा हुआ है; और अपने विश्वास का प्रतिफल अर्थात् आत्माओं का उद्धार प्राप्त करते हो" (1 पतरस 1:7–9)।

यद्यपि उद्धार अभी आरम्भ होता है, परन्तु उद्धार का एक भाग और भी है जिसकी हम प्रतीक्षा कर रहे हैं।

मसीह के वापस आने की आशा

"और उस धन्य आशा की अर्थात् अपने महान् परमेश्वर और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह की महिमा के प्रगट होने की बाट जोहते रहें" (तीतुस 2:13)।

पुनरुत्थान की आशा

"और परमेश्वर से आशा रखता हूँ जो वे आप भी रखते हैं, कि धर्मी और अधर्मी दोनों का जी उठना होगा" (प्रेरितों के काम 24:15)।

3

आशा का महत्व

प्रतिदिन के जीवन में आशा होना महत्वपूर्ण बात है। हमें आशाहीन स्थिति में भी आशापूर्ण व्यक्ति होना है। इस बात के बहुत से कारण है कि हमें क्यों लगातार आशा बनाऐ रखना है।

आशा में विलम्ब होने से आन्तरिक मनुष्यत्व निर्बल होता है

"जब आशा पूरी होने में विलम्ब होता है, तो मन शिथिल होता है, परन्तु जब लालसा पूरी होती है, तब जीवन का वृक्ष लगता है" (नीतिवचन 13:12)।

कभी-कभी उन वस्तुओं को पाने में, जिनकी हम आशा करते हैं, विलम्ब होता है। हम आशा करते हैं कि कोई विशेष काम निश्चित वर्ष में पूरा हो जाए परन्तु वर्ष के अन्त में भी पूरा होता प्रतीत नहीं होता है। हम अपने आपको बताते हैं कि शायद वह कार्य अगले वर्ष में पूरा होगा और वह अगले वर्ष भी पूरा नहीं होता है। जब आशा पूरी होने में विलम्ब होता है, तब आन्तरिक मनुष्यत्व सम्पूर्ण आशा खो देता है और निर्बल हो जाता है। दूसरी ओर, जब आशा पूरी होती है तो यह जीवन के वृक्ष के समान होती है यह हमें बलवान बनाती और हराभरा करती है। हम तरोताजा और नयापन अनुभव करते हैं। हमारा विश्वास ऊपर उड़ने लगता है। हमें प्रेरणा मिलती है और हम आगे बढ़ने के योग्य बन जाते हैं।

आशा प्राणों का लंगर है

"वह आशा हमारे प्राण के लिये ऐसा लंगर है ....'' (इब्रानियों 6:19)।

आशा प्राणों का लंगर है। प्राण शब्द मन, इच्छा और भावनाओं को प्रकट किया गया है। यहाँ लंगर का प्रयोग जलपोत को रोकने के सन्दर्भ में प्रयोग किया गया है। समुद्र में जब जलपोत से लंगर डाला जाता है तब वहाँ तूफान के दौरान स्थिरता आती है। बाइबल बताती है कि आशा प्राणों का लंगर है। इसका अर्थ यह है कि यदि मेरे पास आशा नहीं है, तो मेरा प्राण-मेरी इच्छा,

भावनाऐं और बुद्धि–के पास मुसीबत के समय में आवश्यक स्थिरता और शक्ति नहीं होगी। जब लोग पूर्ण आशा छोड़ देते हैं तो उन्हें जीवन रूपी जलपोत को लगातार चला पाना कठिन जान पड़ता है। वे आसानी से निराशा में पड़ जाते हैं और आशा छोड़ देते हैं। वे सोचने लगते हैं कि उनके जीवन का कोई अर्थ है भी या नहीं। निराशा के विचार "कोई मेरी चिन्ता नहीं करता है," "सब कुछ गलत हो रहा है" और "यह कभी ठीक नहीं हो सकता"आदि उनके मस्तिष्क में घूमने लगते हैं। इस बिन्दु पर बहुत से लोग आत्म हत्या करने के लिए विवश हो जाते हैं। अतः यह बहुत महत्वपूर्ण है कि कठिन परिस्थितियों में भी आशा न छोड़ें। आशा ही प्राणों का लंगर है।

आशा ही विश्वास का अग्रदूत है

"अब विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है" (इब्रानियों 11:1)।

आशा महत्वपूर्ण है क्योंकि विश्वास आशा पर निर्भर है। आशा ही विश्वास के आगे आगे चलती है। केवल तभी हम विश्वास कर पाएंगे जब हमारे पास आशा होगी। एक व्यक्ति के विषय विचार कीजिए जो प्राणघातक बीमारी से ग्रस्त है और चिकित्सकों ने कह दिया है कि अब कोई भी उपचार काम नहीं करेगा और वह कुछ ही दिनों तक जीवित रह पाएगा। तब यह सम्भव है कि अधिक लोग ऐसी परिस्थिति में आशा छोड़ दें। उसके मन में अन्तिम क्षणों, अन्तिम शब्दों और अपनी दफन क्रिया की तस्वीरें घूमने लगेंगी। जब एक व्यक्ति आशा छोड़ देता है तो विश्वास भी काम नहीं कर सकता "विश्वास आशा की गई वस्तुओं का प्रमाण है।" जब एक व्यक्ति चंगाई की आशा नहीं करता है तो उसके लिए परमेश्वर से अपनी चंगाई हेतु विश्वास करना कठिन होगा। परमेश्वर में विश्वास करने के लिए आशा का होना आवश्यक है। इस बीमार व्यक्ति को कम से कम अपने आपको चंगा होते और मृत्यु–शैया से उठकर चलते हुए कल्पना करना चाहिए। यद्यपि चिकित्सकों ने आशा छोड़ दी है, तौभी उसे यह आशा करनी चाहिए कि स्वर्ग का परमेश्वर उसे चंगा कर सकता है और वह ऐसा करने के लिए तैयार है। पूर्ण चंगाई की आशा करने से विश्वास को अपना काम करने में सहायता मिलेगी कि उसकी चंगाई प्रकट हो जाए।

4

वह परमेश्वर जो आशाहीन परिस्थितियों को बदलता है

हमें यह समझने की आवश्यकता है कि चाहे परिस्थिति कैसी भी क्यों न हो, कितनी भी आशाहीन परिस्थिति क्यों न प्रतीत हो, एक परमेश्वर है जो आशाहीन परिस्थितियों को बदलने में विशेषज्ञ है। आमिन्! शायद आपका विवाह, आपकी नौकरी, बच्चे, धन, व्यवसाय अथवा शिक्षा अथवा कुछ और आशाहीन परिस्थिति हो सकती है। चाहे कुछ भी क्यों न हो, इस सत्य पर ध्यान केन्द्रित करें कि हम ऐसे परमेश्वर की सेवा करते हैं जो आशाहीन परिस्थितियों को बदल देता है। इसीलिए हमें आशा नहीं छोड़नी हैं ।आइए बाइबल में कुछ उदाहरणों को देखे जहाँ परमेश्वर ने आशाहीन परिस्थितियों को बदल दिया था:

एक निर्धन महिला

एक महिला के विषय विचार कीजिए जिसका पति मर गया था और उसके दो पुत्र और एक बड़ा ऋण उनके ऊपर छोड़ कर गया था (2 राजा 4:17)। साहूकार अपना पैसा माँगने आए और दोनों बच्चों को बन्दी बनाकर ले जाने की धमकी दी। इस महिला की परिस्थिति वास्तव में आशारहित थी। वह एलीशा नामक परमेश्वर के सेवक के पास गई, उसने उसे अपनी कहानी बताई और उससे मदद माँगी। उसने उससे पूछा कि उसके घर में क्या है। उसने कहा केवल एक कुप्पी में थोड़ा-सा तेल है। एलीशा ने उसे आज्ञा दी कि जितने बर्तन वह माँग सके माँग ले और उनमें तेल उण्डेलना आरम्भ करे। चमत्कारिक रूप से तेल बढ़ गया और सारे बर्तन भर गए। एलीशा ने तब उसे आज्ञा दी वह तेल को बेच दे और ऋण भर दे और अच्छा जीवन जीना आरम्भ करे। परमेश्वर ने चमत्कारिक रूप से इस महिला की आशारहित परिस्थिति को बदल दिया और उसकी आवश्यकता को पूरा किया।?

विवाह भोज में चमत्कार

विवाह भोज के प्रधान के पास दाखरस घट गया–एक अभाव की साधारण परिस्थिति, परन्तु एक आशाहीन परिस्थिति थी। जब वे चिन्तित थे कि क्या करें, मरियम, यीशु की माता ने विवाह भोज के सेवकों से कहा, "जैसा यीशु तुमसे कहे वैसा करना।" यीशु ने उन्हें आज्ञा दी की मटकों को पानी से भर दो और फिर इसे मेहमानों को दो। अलौकिक रूप से यह पानी दाखरस बन गया और सबके लिए पर्याप्त हो गया (यूहन्ना 2:1–11)। यह एक और अलौकिक रूप से आवश्यकता को पूरी करने की घटना है। प्रभु की बात सुनने और उसकी आज्ञानुसार करने से आशारहित परिस्थिति बदल जाती है।

आशारहित रात के बाद एक सुबह

एक व्यापारिक चमत्कार जो प्रभु यीशु ने किया वह हमारे लिए लूका 5 अध्याय में दर्ज किया गया है। पतरस अपने व्यापारी साझेदारों याकूब, यूहन्ना और अन्द्रियास–के साथ मछली पकड़ने के व्यापार में था। वे मछुवे थे। एक समय, उन्होंने पूरी रात मछली पकड़ने में व्यतीत की लेकिन कुछ भी नहीं पकड़ पाए। दूसरे दिन सुबह जब वे लौट रहे थे, प्रभु यीशु उनसे मिले। उसने उनसे आग्रह किया कि वे उसे अपनी नाव प्रयोग करने दें ताकि वे लोग जो उसकी बातें सुनने के लिए जमा हुए थे उन्हें सुसमाचार सुना सके। जब वचन सुना चुका तब प्रभु ने पतरस से कहा कि समुद्र में वापस जाकर पुनः मछली पकड़ने के लिए जाल डालो। पतरस ने उसे उत्तर दिया: "स्वामी, हमने सारी रात मेहनत की और कुछ न पाया, तौभी तेरे कहने से मैं जाल डालूँगा" (लूका 5:5)। पतरस को मालूम था कि उसके प्रयासों से उसे कुछ लाभ नहीं मिला। तौभी वह यीशु की आज्ञानुसार करने के लिए तैयार हो गया।

प्रभु के एक वचन के द्वारा ही परिस्थिति बदल गई। पतरस की आज्ञापालन करने के द्वारा उसके जीवन में "आर्थिक चमत्कार" आया।

इस्राएल राष्ट्र

यहूदी लोग अपने राष्ट्र से हटाए गए और पूरे विश्व में तित्तर-बितर हो गए। एक प्रकार की निराशा ने यहूदी लोगों को घेर लिया था। यहेजकेल 37 में परमेश्वर ने यहेजकेल को सूखी हड्डियों से भरी एक तराई दिखाई कि वह इस्राएल के लोगों की परिस्थिति प्रकट कर सके। "हे मनुष्य के सन्तान, ये हड्डियाँ इस्राएल के सारे घराने की उपमा हैं। वे कहते हैं, हमारी आशा जाती रही; हम पूरी रीति से कट चुके हैं" (यहेजकेल 37:11)।

तब परमेश्वर ने यहेजकेल को आदेश दिया कि वह सूखी हड्डियों से भविष्यवाणी करे, "इस कारण भविष्यद्वाणी करके उन से कह, परमेश्वर यहोवा यों कहता है: हे मेरी प्रजा के लोगो, देखो, मैं तुम्हारी कबरें खोलकर तुम को उन से निकालूँगा, और इस्राएल के देश में पहुँचा दूँगा"(यहेजकेल 37:12)। इस भविष्यद्वक्ता के द्वारा परमेश्वर ने यहूदी लोगों को और इस्राएल देश को पुनगर्ठित करने की बात पहले से बता दी थी। परमरेश्वर ने अपने इस वचन को 14 मई 1948 को पूरा किया जब इस्राएल पूर्ण रूप से एक राष्ट्र घोषित कर दिया गया। पूरे संसार से सारे यहूदी अपने देश को लौटना शुरु हो गए।

अत: परमेश्वर ऐसी परिस्थिति को जिसे हम आशाहीन स्थिति समझते हैं, बदल सकता है। परमेश्वर चाहता है और ऐसा करने के योग्य है कि वह 'कब्रों' को खोल कर 'सूखी हड्डियों' में जीवन डाल कर परिस्थिति को बदल दे। परमेश्वर के लिए कुछ भी आशाहीन नहीं है।

अब्राहम और सारा

अब्राहम और सारा बूढ़े थे जब परमेश्वर ने उन्हें एक पुत्र की प्रतिज्ञा दी थी। उसने उन्हें यह प्रतिज्ञा दी कि उनको एक पुत्र उत्पन्न होगा और इसी पुत्र के द्वारा उनकी सन्तान आकाश के तारों की अनगिनत संख्या और समुद्र के किनारे रेत के समान अनगिनत कणों के समान होंगी। वे आशाहीन परिस्थिति में थे, जब उनके पुत्र उत्पन्न होने की बात आई क्योंकि अब तक उनके पास कोई सन्तान नहीं थी। अब्राहम 99 वर्ष का था और सारा का अब तक बाँझ थी-एक आशारहित परिस्थिति।

बाइबल उस परिस्थिति के विषय में ऐसा कहती है:

"(जैसा लिखा है, 'मैंने तुझे बहुत सी जातियों का पिता ठहराया है')- उस परमेश्वर के सामने जिस पर उसने विश्वास किया, और जो मरे हुओं को जिलाता है, और मरे हुओं को जिलाता है, और जो बातें हैं ही नहीं उनका नाम ऐसा लेता है कि मानो वे हैं। उसने निराशा में भी आशा रखकर विश्वास किया, इसलिये कि उस वचन के अनुसार कि "तेरा वंश ऐसा होगा," वह बहुत सी जातियों का पिता हो" (रोमियों 4:17,18)।

कितना अच्छा उदाहरण है जिसका हम अनुसरण कर सकते हैं। अब्राहम ने "आशा के विपरीत आशा की।" जबकि आशा का कोई कारण नहीं था, अब्राहम ने फिर भी उस आशा में विश्वास किया जिसे परमेश्वर ने उसे दिया था। और इसलिए कि उसने आशा में विश्वास किया,"वह कहे हुए वचन..... के अनुसार बन गया।"

जब परमेश्वर आपको एक प्रतिज्ञा देता है तो ऐसा कभी न कहें, "प्रभु यह प्रतिज्ञा तो अजीब सी है।" यह अजीब सी नहीं हो सकती क्योंकि हमारा परमेश्वर मृतकों को जीवन देता है। अतः जब परमेश्वर आपको एक प्रतिज्ञा देता है, तो चाहे परिस्थिति कैसी भी क्यों न हो, केवल इतना याद रखें कि जो परमेश्वर आपसे बोल रहा है, वह वही है जो मृतकों को जीवन देता है-उनको ऐसे पुकारता है मानो कि वे हैं- और वह किसी भी परिस्थिति को बदल सकता है। परमेश्वर न केवल परिस्थिति को बेहतर बना सकता है बल्कि वह किसी भी परिस्थिति को पूर्ण रूप से बदल सकता है। वह उन वस्तुओं को अस्तित्व में ला सकता है जो पहले कभी अस्तित्व में नहीं थीं। इस समय, घर में शान्ति नहीं हो सकती, परन्तु परमेश्वर वहाँ शन्ति ला सकता हैं आपके शरीर में चंगाई का अस्तित्व नहीं हो सकता है, परन्तु परमेश्वर चंगाई का अस्तित्व ला सकता है। आपके परिवार, नौकरी और व्यवसाय में सफलता का अस्तित्व नहीं हो सकता है लेकिन परमेश्वर इन सभी कामों में सफलता का अस्तित्व ला सकता है।

5

आशाहीन परिस्थितियों में आशा हेतु आधार

आशाहीन परिस्थिति में आशा रखने के क्या आधार हैं? क्या यह मात्र कल्पना है? क्या यह मस्तिष्क के प्रश्न का मामला है? क्या यह सकारात्मक होने जैसी बात है? क्या यह मानवीय प्रयास है कि आप सकारात्मक बने रहें? एक ही कारण हैं कि हम कठिन परिस्थितियों में भी आशा कर सकते हैं वह है परमेश्वर और उसका वचन।

"उसने निराशा में भी आशा रखकर विश्वास किया, इसलिये कि उस वचन के अनुसार कि 'तेरा वंश ऐसा होगा,' वह बहुत सी जातियों का पिता हो" (रोमियों 4:18)।

अब्राहम ने परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर विश्वास किया, यद्यपि विश्वास करने का कोई कारण नहीं था। जब परिस्थिति आशाहीन थी तौभी उसने विश्रवास किया। क्यों? क्योंकि परमेश्वर ने कहा था। उसने आशा में विश्वास किया "जो कुछ बोला गया था उसी के अनुसार।" वही उसकी आशा का आधार था। परमेश्वर ने बोला और यद्यपि परिस्थिति निराशापूर्ण थी, अब्राहम ने आशा के विपरीत विश्वास किया।

परमेश्वर और उसका वचन हमारी आशा का आधार बना है

"परन्तु हे यहोवा, मैंने तुझ ही पर अपनी आशा लगाई है; हे प्रभु, मेरे परमेश्वर, तू ही उत्तर देगा" (भजन संहिता 38:15)।

"मैं यहोवा की बाट जोहता हूँ, मैं जी से उसकी बाट जोहता हूँ, और मेरी आशा उसके वचन पर है" (भजन संहिता 130:5)।

"जितनी बातें पहले से लिखीं गईं, वे हमारी ही शिक्षा के लिये लिखी गई हैं कि हम धीरज और पवित्रशास्त्र के प्रोत्साहन द्वारा आशा रखें" (रोमियों 15:4)।

परमेश्वर ही हमारी आशा का कारण, स्रोत और शक्ति है। उसका

वचन हमारी आशा का आधार बनता है। वह धैर्य और शान्ति ही है जो वचन के द्वारा हमारे हृदयों में डाली जाती है, उसी के द्वारा हम अपनी आशा को बनाए रखते हैं।

भविष्य के लिए आशा

आइए अब हम उन सब के विषय जो हमने अब तक पढ़ा है, व्यवहारिक रुप में देखें। आपमें से कुछ जो इस पुस्तक को पढ़ रहे हैं वे कह रहे होंगे, "मेरे पास भविष्य की कोई आशा नहीं है" अथवा "मैं नहीं सोचता कि मैं आगे बढ़ पाऊँगा। मेरे जीवन में इससे अधिक और कुछ नहीं होने वाला।" मैं चाहता हूँ कि आप यह जानें कि परमेश्वर और उसके वचन के कारण हमारे पास भविष्य की आशा है। उसका वचन कहता है:

परन्तु जैसा लिखा है: "जो बातें आँख ने नहीं देखीं और कान ने नहीं सुनीं, और जो बातें मनुष्य के चित में नहीं चढ़ीं, वे ही हैं जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखनेवालों के लिये तैयार कीं हैं" (1 कुरिन्थियों 2:9)।

हमारे पास भविष्य की आशा है। हम भविष्य में अद्‌भुत बातों को देखने की आशा लगाए हैं। क्यों? परमेश्वर के वचन के कारण। क्योंकि वह कहता है कि उसने ऐसी बातों को उनके लिए तैयार किया है जो उससे प्रेम करते हैं।

"क्योंकि यहोवा की यह वाणी है, कि जो कल्पानएँ मैं तुम्हारे विषय करता हूँ उन्हें मैं जानता हूँ, वे हानि की नहीं, वरन् कुशल ही की हैं, और अन्त में तुम्हारी आशा पूरी करूँगा" (यिर्मयाह 29:11)।

यही हमारी आशा का आधार है–वचन। अत: हम एक अच्छे भविष्य की आशा कर सकते हैं। हमारी वर्तमान परिस्थिति हमारी अन्तिम नियति का संकेत नहीं है। हमारी यह आशा है कि हमारा भविष्य सुदृढ़, सफल और सुरक्षित होगा, उन प्रतिज्ञाओं के कारण जो उसने अपने वचन में कहीं हैं। हम अपनी वर्तमान परिस्थितियों को अनुमति नहीं देंगे कि वे हमें नीचे डाल दें।

सफल बनने की आशा

आप में कुछ लोगों के ये विचार होगे कि क्या वे जीवन में कभी सफल व्यक्ति बन पाएंगे। जो कुछ प्रयास आपने किए हैं वे सब के सब असफल हो गए हैं और आप अब तक जीवन में सफल व्यक्ति नहीं बन पाए। आपको अवश्य ही परमेश्वर के वचन में विश्वास करना चाहिए:

"क्या ही धन्य है वह पुरुष जो दुष्टों की युक्ति पर नहीं चलता, और न पापियों के मार्ग में खड़ा होता; और न ठट्टा करनेवालों की मण्डली में बैठता है! परन्तु वह तो यहोवा की व्यवस्था से प्रसन्न रहता; और उसकी व्यवस्था पर रात दिन ध्यान करता रहता है। वह उस वृक्ष के समान है, जो बहती नालियों के किनारे लगाया जाता है और अपनी ऋतु में फलता है, और जिसके पत्ते कभी मुरझाते नहीं। इसलिये जो कुछ वह पुरुष करे वह सफल होता है" (भजन संहिता 1: 1-3)।

अपने आपको एक फलवन्त वृक्ष के रुप में चित्रित करें। अपने आपको एक ऐसे व्यक्ति के रुप में देखे जो जिन-जिन कामों में हाथ लगाता है वह सम्पन्न होता है यह परमेश्वर का वचन आपके जीवन के बारे में है और किसी भी परिस्थिति को अनुमति न दें कि वह परमेश्वर की योजना जो आपके लिए है, उसे चुराऐ न पाए।

अपने सपनों को पूरा करने की आशा

आप में से कुछ लोगों ने तो सारी आशा ही छोड़ दी है कि अपने सपनों को कभी पूरा नहीं कर पाएंगे। परमेश्वर का वचन कहता है:

"यहोवा को अपने सुख का मूल जान, और वह तेरे मनोरथों को पूरा करेगा" (भजन संहिता 37:4)।

मैं भी ऐसी परिस्थितियों में रहा हूँ जब ऐसा लगा कि मैं अपने सपनों को कभी पूरा नहीं कर पाऊँगा। मुझे याद है जब मैं बड़ा हो रहा था तो मेरा यह स्वप्न था कि मैं बंगलौर शहर में एक सुदृढ़ कलीसिया की स्थापना करूँगा जो संसार के राष्ट्रों को प्रभावित करेगी। बहुत सी घटनाएं हुई और मैं ऐसी परिस्थितियों में पड़ गया जब मैं सोचने लगा कि मैं अपना यह स्वप्न

कभी पूरा नहीं कर पाऊँगा। ऐसा लग रहा था कि मानो वह एक स्वप्न मात्र ही होगा। ऐसा लगा कि मैं इसे आरम्भ भी नहीं कर पाऊँगा। तौभी मैंने अपनी इस आशा को जीवित रखा। क्योंकि उसका वचन कहता है कि वह मुझे एक "भविष्य और आशा" देगा और उसने ऐसी चीजें तैयार की हैं जिसे "आँख ने नहीं देखा और कानों ने नहीं सुना।" उसका वचन यह भी कहता है कि यदि हम उसमें आनन्दित रहेंगे तो वह मेरे मन की इचछाओं को पूरा करेगा। उसका वचन एक सा रहेगा चाहे हमारी परिस्थितियाँ अधिक खराब ही क्यों न होती जाएं। मैं उसके वचन को पकड़े रहा। उसका वचन मेरी आशा का आधार बना। अब मैं इसी स्वपन को पूरा होते हुए देख रहा हूँ। हाल्लेलुय्याह!

आपके बच्चों के लिए आशा

आप में से कुछ अपने बच्चों के विषय में आशा खो रहे होंगे। यद्यपि आपने उनको ठीक से प्रशिक्षित किया है और वचन से सिखाया है। परन्तु अब वे जीवन के ऐसे मोड़ पर है जहाँ वे ऐसे कामों में फँस गए हैं जिसकी आपने कभी कल्पना भी नहीं की थी। शायद उन्होंने अपनी पढ़ाई छोड़ दी है, अथवा नशीली दवाओं और शराब की आदतों में पड़ गए है। आपके द्वारा उन्हें दिया गया प्रशिक्षण अब आपको सब बेकार लगता है। आप सोच रहे हैं कि आपका वर्षो का कठिन परिश्रम बेकार चला गया । आपने अपने बच्चों के विषय में आशा छोड़ दी है। मैं आपको उत्साहित करते हुए कहना चाहता हूँ, "आशा न छोड़ें।" परमेश्वर का वचन कहता है:

"याह की स्तुति करो! क्या ही धन्य है वह पुरुष जो यहोवा का भय मानता है, और उसकी आज्ञाओं से अति प्रसन्न रहता है! उसका वंश पृथ्वी पर पराक्रमी होगा; सीधे लोगों की सन्तान आशीष पाएगी" (भजन संहिता 112: 1,2)

आप प्रभु से कह सकते हैं, "मैं आपके वचन में आशा कर रहा हूँ। आपका वचन कहता है कि मेरे बच्चे इस पृथ्वी पर शक्तिशाली होंगे।" इसका अर्थ है कि आपके बच्चे इस पृथ्वी पर कुछ बनेंगे। वे परमेश्वर के राज्य के लिए कुछ करेंगे। वे इस पृथ्वी पर यूँ ही नाश नहीं होंगे। वे परमेश्वर के लिए एक प्रभाव डालेंगे।

"तेरे सब लड़के यहोवा के सिखलाए हुए होंगे, और उनको बड़ी शान्ति मिलेगी" (यशायाह 54:13)।

ऊपर का पद आपकी आशा का आधार हो। आशा बनाए रखें। शायद आपका बच्चा आज आपकी नहीं सुनता है। परन्तु आप आशा के विपरीत परमेश्वर के वचन में आशा कर सकते हैं।

चंगाई के लिए आशा

आप में से कुछ लोग रोग और बीमारी से पीड़ित होंगे और चिकित्सकों ने आपको कह दिया है कि अब आपके लिए कोई आशा नहीं है। यह वचन परमेश्वर के विषय में कहता है:

"वही तो तेरे सब अधर्म को क्षमा करता, और तेरे सब रोगों को चंगा करता है" (भजन संहिता 103:3)।

यही आशा आपके लिए है। अपनी आशा को जीवित रखें। अपने आप को पूर्ण चंगाई और स्वास्थ्य वाले व्यक्ति के रूप में चित्रित करें जैसा कि बाइबल कहती है।

"अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न होना; यहोवा का भय मानना, और बुराई से अलग रहना। ऐसा करने से तेरा शरीर भला चंगा, और तेरी हड्डियाँ पुष्ट रहेंगी" (नीतिवचन 3:7,8)।

परमेश्वर के प्रति आपका आदरपूर्ण भय आपके शरीर में चंगाई लाता है।

हम आशाहीन परिस्थितियों में भी परमेश्वर और उसके वचन के कारण आशा रख सकते हैं।

6

आशाहीन परिस्थिति में मैं क्या करूँ?

"(जैसा लिखा है, "मैंने तुझे बहुत-सी जातियों का पिता ठहराया है) उस परमेश्वर के सामने जिस पर उसने विश्वास किया, और जो मरे हुओं को जिलाता है, और जो बातें हैं ही नहीं उनका नाम ऐसा लेता है कि मानो वे हैं। उसने निराशा में भी आशा रखकर विश्वास किया, इसलिये कि उस वचन के अनुसार कि "तेरा वंश ऐसा होगा" वह बहुत सी जातियों का पिता हो। वह जो एक सौ वर्ष का था, अपने मरे हुए से शरीर और सारा के गर्भ की मरी हुई की सी दशा जानकर भी विश्वास में निर्बल न हुआ, और न अविश्वासी होकर परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर संदेह किया, पर विश्वास में दृढ़ होकर परमेश्वर की महिमा की; और निश्चय जाना कि जिस बात की उसने प्रतिज्ञा की है, वह उसे पूरा करने में भी सामर्थ है" (रोमियों 4:17-21)।

हम आशाहीन परिस्थिति में क्या करते हैं ताकि परमेश्वर इस परिस्थिति को बदल सके? हम अब्राहम के जीवन से क्या सीखते हैं? उसने ऐसा क्या किया ताकि परमेश्वर उसकी आशाहीन परिस्थिति को बदल सके? बाइबल कहती है कि अब्राहम ने आशा के विपरीत विश्वास किया ताकि जो प्रतिज्ञा उसके लिए की गई थी वह उसके जीवन में पूरी हो सके (रोमियों 4:18)। क्या आप विश्वास करेंगे कि जो परमेश्वर ने कहा है वह पूरा होगा? उदाहरण के लिए, परमेश्वर का वचन कहता है, "जो कुछ तू करेगा उसमें तू सम्पन्न होगा" और यह आप को विश्वास करना होगा। क्या आप विश्वास करेंगे?

उस आशा में विश्वास करें जिसे परमेश्वर ने आप के लिए कहा है कि वह आप बनेंगे

परमेश्वर और उसका वचन एक ही है। वचन में विश्वास करना परमेश्वर में विश्वास करना है। आप की सारी आशा के विपरीत विश्वास करना है।

अतः जब सब कुछ आशाहीन लगे, तब भी आपको यह विश्वास करना है कि आप परमेश्वर की प्रतिज्ञा के अनुसार बनेंगे। आशा न छोड़ें ।

आशाहीन परिस्थिति को अपने विश्वास को शिथिल न करने दें

अब्राहम "वह जो एक सौ वर्ष का था, अपने मरे हुए से शरीर और सारा के गर्भ की मरी हुई की सी दशा जानकर भी विश्वास में निर्बल न हुआ" (रोमियों 4:19)। उसने अपने विश्वास को निर्बल नहीं होने दिया, जब उसने अपनी देह की दशा और अपने चारों ओर की परिस्थितियों को देखा। किसी भी स्थिति में आशा हीनता को अपने विश्वास को कमज़ोर होने न दें। चारों ओर देखकर यह न कहें, "अब यह ठीक नहीं हो सकता है।"

तौभी, इसका अर्थ यह नहीं है कि आप परिस्थितियों का इंकार करें। केवल इतना है कि अपनी परिस्थितियों की वास्तविकता को अपने विश्वास को कमजोर न करने दें। बल्कि आप अपने अपको ऐसे चित्रित करें जैसा परमेश्वर ने आपको प्रतिज्ञा दी है। उदाहरण के लिए, अपने आपको पूर्ण स्वस्थ व्यक्ति; जीवन में सफल व्यक्ति अपने विवाह को सही और व्यवस्थित, अपने बच्चों को प्रभु की सेवा करते और उसके मार्गो में चलते हुए, के रूप में चित्रित करें। ऐसी तस्वीर परमेश्वर के वचन पर आधारित हो और इसे आप कई बार देखें।

एक रात, परमेश्वर इब्राहीम को उसके तम्बू से बाहर लाया और उससे कहा कि वह आकाश में सितारों को देखे। और उसने उससे कहा, "इसी प्रकार तेरी सन्तान होगी" (उत्पत्ति 15:5)। इब्राहीम के मन में परमशेवर की प्रतिज्ञा की "तस्वीर" थी वह अपनी सन्तान को आकाश के सितारों के समान असंख्य "देख" सका। जब-जब इब्राहीम अपने शरीर और अपनी पत्नी के गर्भ की मृतक दशा को देखता था, तब-तब वह परमेश्वर की प्रतिज्ञा याद करता था कि परमेश्वर ने उसे यह प्रतिज्ञा दी है कि उसकी सन्तान आकाश के सितारों और पृथ्वी पर की रेत के समान होगी। प्रायः मैं अपने आपको हजारों लोगों को परमेश्वर का वचन प्रचार करते हुए देखता हूँ। मैं अपनी स्थानीय कलीसिया को नगर के पाँच विभिन्न स्थानों में जिनमें हजारों लोग सदस्य हैं, मिलते हुए देखता हूँ। अतः रविवार सुबह को चर्च में खाली

कुर्सियों को देखकर मेरा विश्वास कमजोर नहीं होता है क्योंकि मेरे मस्तिक में अन्तिम मंजिल की तस्वीर है। आपकी वर्तमान परिस्थिति कुछ भी क्यों न हो, अपने मन में अन्तिम मंजिल की तस्वीर बनाएं और लगातार आशा लगाएं रहें।

निश्चय और धैर्य का प्रदर्शन करें

एक और बात हम इब्रहीम के जीवन में देखते हैं कि वह "विश्वास से हटा" नहीं (रोमियों 4:20)। वह परमेश्वर की प्रतिज्ञा में "लड़खड़ाया" नहीं (रोमियों 4:20)। वह परमेश्वर की प्रतिज्ञा के विश्वास में विचलित नहीं हुआ। उसने निश्चय और धैर्य का प्रदर्शन किया। विश्वास के साथ-साथ निश्चय और धैर्य बहुत आवश्यक है। रोमियों 8:25 कहता है, "परन्तु जिस वस्तु को हम नहीं देखते, यदि उसकी आशा रखते हैं, तो धीरज से उसकी बाट जोहते भी है।" यद्यपि हममें से बहुत लोग बहुत सी वस्तुओं की आशा करते हैं; हम उन्हें जल्दी ही प्राप्त करना चाहते हैं। परन्तु दूसरी ओर, वचन हमें परामर्श देता है कि हम उन वस्तुओं की धर्य से प्रतीक्षा करे जिन्हें हम नहीं देखते, आसानी से छोड़ न दें। कुछ धर्य से प्रतीक्षा करें। प्रेरित पौलुस कहते हैं:

"और अपने परमेश्वर और पिता के सामने तुम्हारे विश्वास के काम, और प्रेम का परिश्रम, और हमारे प्रभु यीशु मसीह में आशा की धीरता को लगातार स्मरण करते हैं" (1 थिस्सलुनीकियों 1:3)।

आशा धैर्य है! वास्तविक आशा जो वचन पर आधारित है वह धैर्य है।

"यहोवा से उद्धार पाने की आशा रखकर चुपचाप रहना भला है" (विलापगीत 3:26)।

जब आपके पास सच्ची आशा होती है तब वहाँ शान्ति, सन्तोष, और सौहार्द होता है। आप जान लेते हैं कि ऐसा होगा। आप परेशान, अधैर्य

और विद्रोही होकर सबको पीछे धकेल कर अपनी इच्छा पूरी नहीं करना चाहेंगे। बल्कि आप शान्त रहेंगे क्योंकि आप जानते हैं कि जो आप विश्वास करते हैं वह अवश्य पूरा होगा। आप निश्चित होकर धैर्य के साथ प्रतीक्षा

करते हैं। दृढ़ निश्चय परमेश्वर के वचन में लगातार आज्ञापालन से प्रकट होता है निकलने का सरल रास्ता न ढूंढ़े। इससे आगे चलकर समस्या और अधिक उलझनपूर्ण बन जाएगी।

अपना आनन्द बनाए रखें परमेश्वर की स्तुति करें

अब्राहम ने परमेश्वर को महिमा दी (रोमियों 4:20)। जब आपके पास आशा है तब आपके पास आनन्द है। जब आपके पास परमेश्वर के वचन के अनुसार आशा है– तब आप आनन्दित हो सकते हैं। एक समय होता है कि आप परिस्थिति में आनन्दित होते हैं। परन्तु ऐसा समय भी होता है जब आप आशा में आनन्दित होते हैं। आप में से जिनके पास छोटे बच्चे हैं, वे जानते हैं कि जब उनके जन्मदिन निकट आते हैं तो वे कितने आनन्दित होते हैं। जब हमारी बेटी रूत ने हाल ही में अपना जन्मदिन मनाया तो वह एक सप्ताह पहले से ही उसकी प्रतीक्षा करने लगी थी। वह "आशा में आनन्दित" थी। वह सच में बहुत आनन्दित थी, और अपने जन्मदिन के पूर्व रात्रि उसने कहा, "पिता जी, जब मैं सुबह उठूँ तो आप यह कहना, 'हे जन्मदिन वाली लड़की सुबह का नमस्कार।" सत्य यह है कि जिस जन्मदिन को वह अगले दिन मनाने जा रही थी वह दिन "अभी" आनन्द लाया था। अभी तक उसका जन्म दिन नहीं आया था फिर वह आशा में आनन्दित थी। मसीही होने के नाते, हम आशा में आनन्दित होते हैं। हम आनन्दित होते हैं कि प्रभु परिस्थितियों को बदलेगा। हम आशा में आनन्दित होते हैं।

"परमेश्वर जो आशा का दाता है तुम्हें विश्वास करने में सब प्रकार के आनन्द और शान्ति से परिपूर्ण करे, कि पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से तुम्हारी आशा बढ़ती जाए" (रोमियों 15:13)।

"आशा में आनन्दित रहो; क्लेश में स्थिर रहो; प्रार्थना में नित्य लगे रहो" (रोमियों 12:12)।

हम आशा में लिपटे रह सकते हैं और आशा का परमेश्वर हमें आनन्द और शान्ति से भरता है। आनन्द और शान्ति हमारे जीवनों में आती है जब हम विश्वास करते हैं। कभी–कभी लोग शिकायत करते और बड़बड़ाते हैं जब उनको लम्बे समय तक प्रतीक्षा करनी पड़ती है। उन्हें केवल आशा की

तस्वीर ही बनाना है वर्तमान परिस्थितियों के बजाय उन्हें आशा की तस्वीर को अपने सामने रखना चाहिए। आपको यह जानकर आनन्द और शान्ति मिलेगी कि वह तस्वीर एक दिन वास्तविकता बन जाएगी।

"हे मेरे प्राण, तू क्यों गिरा जाता है? तू अन्दर ही अन्दर क्यों व्याकुल है? परमेश्वर पर आशा लगाए रह; क्योंकि मैं उसके दर्शन से उद्धार पाकर फिर उसका धन्यवाद करूँगा" (भजन संहिता 42:5)।

"मैं तो निरन्तर आशा लगाए रहूँगा, और तेरी स्तुति अधिकाधिक करता जाऊँगा" (भजन संहिता 71:14)।

जब एक व्यक्ति के पास आशा होती है तब उसके पास आनन्द और परमेश्वर की स्तुति करने की योग्यता होती है। शायद, जब आप इसे पढ़ रहे हैं, आप आशाहीन परिस्थिति में हो सकते हैं और यह कह रहे हैं, "मैं कैसे खुश हो सकता हूँ?" बाइबल कहती है कि "आशा में आनन्दित" रहो। हम कैसे परमेश्वर की स्तुति कर सकते हैं? हम उस आशा के कारण जो हमारे पास है परमेश्वर की स्तुति कर सकते हैं। आज सारी बातें बुरी लग सकती है आज परिस्थितियाँ कठिन लग सकती हैं। परन्तु आप फिर भी प्रभु की स्तुति कर सकते हैं क्योंकि आप जानते हैं कि ये बातें सदैव नहीं ठहरेंगी। बाइबल का परमेश्वर ऐसा परमेश्वर है जो आशाहीन परिस्थितियों को बदल देता है और वह आपके लिए ऐसा करेगा। अपनी आशा को जीवित रखें। आशा में विश्वास करें।

एक गीत है जिसे हम गाया करते थे। इस गीत के शब्द बहुत उत्साहवर्धक हैं:

प्रभु की स्तुति करो

जब तुम संघर्षों का सामना करो
जो तुम्हारे सारे सपनों को तोड़ दे
और तुम्हारी आशा दूर चुकी हो
शैतान की दृश्य दाँव पेंच के द्वारा
और तुम अन्दर ही अन्दर दुखी हो रहे हो
संसार के डर के आगे झुकते हो

जिस विश्वास पर तुम खड़े हो उसे जाने न देना

(कोरस)
प्रभु की स्तुति करो
वह अपने प्रशंसकों के द्वारा काम करता है
प्रभु की स्तुति करो
क्योंकि हमारा प्रभु स्तुति चाहता है
प्रभु की स्तुति करो
क्योंकि वे ज़जीरें जो तुम्हें बांधती हैं
वे तुम्हें याद दिलाती हैं कि वे आपके पीछे निरस्त हैं
जब तुम प्रभु की प्रशंसा करते हो

अब शैतान झूठा है
और वह हमें सोचने देता है
कि हम भिखारी हैं
जब कि वह स्वयं जानता है
कि हम राजा की सन्तान हैं
इसलिए विश्वास की ढाल लेकर खड़े हो जाएं
क्योंकि युद्ध जीत लिया गया है
हम जानते हैं कि यीशु मसीह जीवित हो गया है
अतः कार्य पहले ही पूर्ण हो चुका है

© इम्पीरियल एलबम् हीड कि दि कॉल डेस्प्रिंग (वर्ड) पर प्रसारित 1979

वर्डस् एण्ड म्यूजिक द्वारा : बाऊॅन बैनिस्टर और माईक हड्सन्

शायद आप इस पुस्तक को पढ़ रहे हैं और कह रहे हैं, "मैं आशाहीन परिस्थिति में हूँ।" शायद यह आपका विवाह, आपका घर, बच्चे, धन, नौकरी, व्यवसाय अथवा व्यापार की परिस्थिति हो सकती है–जीवन की कोई भी स्थिति हो सकती हैं इस प्रकार की परिस्थितियों का हम सभी सामना करते हैं। मैं आपको प्रोत्साहित करना चाहता हूँ– **आशा न छोड़ें** । आशा न छोड़ना बहुत महत्वपूर्ण है। जब आप आशा छोड़ देते हैं आपका आन्तरिक मनुष्यत्व निर्बल हो जाता है। जब आप आशा छोड़ देते हैं तब आप उस

जलपोत के समान हो जाते हैं जिसमें लंगर नहीं होता। तब आप डूबने लगते हैं। जब आप आशा छोड़ देते हैं तब विश्वास का व्यवहार करना कठिन हो जाता है क्योंकि बिना आशा के आप विश्वास नहीं कर सकते।

परमेश्वर और उसके वचन में आशा रखें। उस बात को स्मरण करें जिसे परमेश्वर ने आपके जीवन के लिए कहा है। आपके घर और विवाह के लिए परमेश्वर की क्या प्रतिज्ञा है? उन प्रतिज्ञाओं को थामे रहें जो आपको मिली हैं। उसके वचन को अपनी आशा का कारण बनाएं। क्योकि परमेश्वर ने कहा है अतः आप अपनी परिस्थितियों को बदलने के लिए अभी भी आशा कर सकते हैं। अपने मस्तिष्क में वह तस्वीर बनाए जब परमेश्वर की प्रतिज्ञा पूरी होगी। इससे आपको अपनी आशा का जीवित रखने में सहायता मिलेगी।

"परमेश्वर अब जो ऐसा सामर्थी है कि हमारी विनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ्य के अनुसार जो हम में कार्य करता है" (इफिसियों 3:20)।

- उस आशा में विश्वास करें कि आप परमेश्वर के कहे हुए वचन के अनुसार बन जाएंगे।
- आशाहीनता की स्थिति आपके विश्वास को शिथिल न करने पाए।
- निश्चय और धैर्य का प्रदर्शन करें।
- अपना आनन्द बनाए रखें और प्रभु की स्तुति करें।

All Peoples Church & World Outreach, Bangalore, India, has extended its ministry by launching its Bible College & Ministry Training Center (APC-BC&MTC) in August 2005. APC-BC&MTC equips, trains and releases faithful men and women to impact villages, towns and cities in India and other nations, for Jesus Christ.

APC-BC&MTC offers 2 programs:

- ➢ The two-year and three-year **Bible College** programs are for full-time students and provides spiritual and practical ministry training along with academic excellence. The programs are designed to equip and empower students to successfully fulfil the call of God upon their lives. Upon completing the two-year program students will receive a **Diploma in Theology & Christian Ministry (Dip.Th.&CM).** The three-year program will lead to a **Bachelor's Degree in Theology & Christian Ministry (B.Th.&CM)**.

- ➢ The **Practical Ministry Training** is for graduates from the Bible College who desire to undergo practical training. Those completing one or more years receive a **Certificate in Practical Ministry** indicating the duration of involvement.

Classes are conducted in English. The faculty comprises of both trained and anointed teachers of the Word. All faculty and students have access to APC's Study Centre and Library (SC&L). The SC&L contains books, teaching tapes, videos, VCDs/DVDs and music CDs.

Publications from All Peoples Church

A Church in Revival
Ancient Landmarks
A Real Place Called Heaven
A Time for Every Purpose
Being Spiritually Minded and Earthly Wise
Biblical Attitude Towards Work
Breaking Personal and Generational Bondages
Change
Divine Order in the Citywide Church
Don't Compromise Your Calling
Don't Lose Hope
Fulfilling God's Purpose for Your Life
Giving Birth to the Purposes of God
God Is a Good God
God's Word
How to Help Your Pastor
Integrity
Kingdom Builders—Vol. I
Laying the Axe to the Root
Living Life Without Strife
Open Heavens
Our Redemption
The Conquest of the Mind
The Night Seasons of Life
The Power of Commitment
The Presence of God
The Refiner's Fire
The Spirit of Wisdom, Revelation and Power
Understanding the Prophetic
We Are Different
Who We Are in Christ
Women in the Workplace

Gospel Booklets

He is Here
Love That Is Deeper Than Love Itself
What Can Wash Away My Sins?

ऑल पीपुल्स चर्च के विषय में

ऑल पीपुल्स चर्च में हमारा दर्शन यह है कि हम बंगलौर शहर में नमक और ज्योति बनें और भारतवर्ष तथा संसार के अन्य राष्ट्रों के लिए एक आवाज बनें।

यह हमारी ओर से आपके लिए एक भेंट है! यह मुफ्त है!

हम विश्वास करते हैं कि इस पुस्तक को पढ़ने के द्वारा आपको आशीष मिली होगी।

हजारों प्रतियाँ आप जैसे लोगों को मुफ्त में बांटी जाती हैं। हम चाहते हैं कि आप हमारे आर्थिक सहयोगी बनें ताकि हम परमेश्वर का वचन बहुतों के साथ बांट सकें। आपके लगातार आर्थिक अनुदानों से हमें परमेश्वर का वचन अन्य लोगों तक पहुंचाने में सहायता मिलेगी। जैसा प्रभु आपको अगुवाई करे, आप ऑल पीपुल्स चर्च के सहयोगी बन सकते हैं। आप अपने दान चैक / डिमाण्ड ड्राफ्ट / मनीआर्डर ''ऑल पीपुल्स चर्च, बंगलौर'' के नाम भेज सकते हैं।

जब आप हमें लिखें तो आप अन्य प्रकाशनों हेतु भी निवेदन करें। हमें यह भी लिखें कि इस पुस्तक ने आपकी कैसे सेवा की है, साथ ही अपने प्रार्थना निवेदन और टिप्पणी भी भेजें। आप हमसे निम्न पते पर सम्पर्क कर सकते हैं:

ऑल पीपुल्स चर्च
सोभा जेड A216
जक्कूर, बंगलौर-560064
कर्नाटक, भारत
फोन + 91-80-23544328
ईमेल : contact@apcwo.org
बेबसाइट : www.apcwo.org

भारत में ऑल पीपुल्स चर्च

इस समय ऑल पीपुल्स चर्च की शाखाएं भारत में निम्नलिखित शहरों में हैं :

ऑल पीपुल्स चर्च–बंगलौर (कर्नाटक)

ऑल पीपुल्स चर्च–थोकोटू, मंगलौर (कर्नाटक)

ऑल पीपुल्स चर्च–कल्याण, मुम्बई (महाराष्ट्र)

ऑल पीपुल्स चर्च–विशाखापटनम (आन्ध्र प्रदेश)

ऑल पीपुल्स चर्च–सोनितपुर (आसाम)

ऑल पीपुल्स चर्च–बेरहामपुर (उड़ीसा)

ऑल पिपुल्स चर्च - नागपुर (महाराष्ट्र)

समय समय पर पूरे भारत में नई कलीसियाओं की स्थापना की जा रही है। वर्तमान सूची और ऑल पीपुल्स चर्च की सम्पर्क सूचना प्राप्त करने हेतु कृपया हमारे बेबसाइट www.apcwo.org पर देखें अथवा contact@apcwo.org पर ईमेल भेजें।

क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपको प्यार करता है?

लगभग 2000 वर्ष पहले परमेश्वर इस संसार में एक मनुष्य बनकर आए। उनका नाम यीशु है। उन्होंने पूर्ण पापरहित जीवन जीया। चूँकि यीशु मानव रूप में परमेश्वर थे, उन्होंने जो कुछ कहा और किया उसके द्वारा हमारे समक्ष परमेश्वर को प्रकट किया। उन्होंने जो वचन कहे वे परमेश्वर के ही वचन थे। जो कार्य उन्होंने किये वे परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने बहुत से चमत्कार इस पृथ्वी पर किये। उन्होंने बीमारों और पीड़ितों को चंगा किया। अंधों को आंखें दीं, बहिरों के कान खोले, लंगड़ों को चलाया और हर प्रकार की बीमारी और रोग को चंगा किया। उन्होंने चमत्कार करके कुछ रोटियों से बहुतों को खाना खिलाया था। तूफान को शान्त किया और अन्य बहुत से अद्भुत काम किए।

ये सभी कार्य हमारे समक्ष यह प्रकट करते हैं कि परमेश्वर एक भला परमेश्वर है जो यह चाहता कि मनुष्य ठीक, स्वस्थ और प्रसन्न रहें। परमेश्वर मनुष्यों की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करना चाहता है।

परमेश्वर ने मानव बनकर इस पृथ्वी पर आने का निश्चय क्यों किया? यीशु इस संसार में क्यों आए?

हम सबने पाप किया है और ऐसे काम किए हैं जो परमेश्वर के समक्ष ग्रहण योग्य नहीं हैं जिसने हमें बनाया है। पाप के परिणाम होते हैं। पाप एक बड़ी दीवार की तरह परमेश्वर और हमारे बीच में खड़ी है। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उसे जानने और उससे अर्थपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने से रोकता है जिसने हमें बनाया है। अतः हममें से बहुत से लोग इस खालीपन को अन्य वस्तुओं से भरना चाहते हैं।

हमारे पापों का एक और परिणाम यह है कि हम परमेश्वर से सदा के लिए दूर रहते हैं। परमेश्वर के न्यायालय में पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से सदा के लिए अलगाव है जो हमें नर्क में बिताना पड़ेगा।

परन्तु शुभ समाचार यह है कि हम पाप से मुक्त होकर परमेश्वर से सम्बन्ध रख सकते हैं। बाइबल कहती है, **''पाप की मजदूरी (भुगतान) तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है''** (रोमियों 6:23)। यीशु ने सारे संसार के पापों के लिए मूल्य चुकाया जब उसने क्रूस पर अपने प्राण दिये। तब तीसरे दिन वह जीवित हो गए, बहुतों को उन्होंने अपने आपको जीवित दिखाया और तब वह वापस स्वर्ग चले गए।

परमेश्वर प्रेम और दया का परमेश्वर है। वह नहीं चाहता कि कोई भी नर्क में नाश हो। इसलिए वह आया ताकि सारी मानव जाति को पाप से छुटकारे और उसके अनन्त परिणामों से बचा सके। वह पापियों को बचाने– आप और मुझ जैसे लोगों को पाप और अनन्त मृत्यु से बचाने आया था।

पाप की निशुल्क क्षमा प्राप्त करने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है–जो कुछ उसने क्रूस पर किया उसे स्वीकार करना और उस पर पूर्ण हृदय से विश्वास करना है।

जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी (प्रेरितों के काम 10:43)।

यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा (रोमियों 10:9)।

आप भी अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकते हैं यदि आप प्रभु मसीह पर विश्वास करें।

निम्नलिखित एक साधरण प्रार्थना है ताकि इससे आपको यह फैसला करने में और प्रभु यीशु मसीह के द्वारा आपके लिए किए क्रूस के कार्य पर विश्वास करने में सहायता कर सके। यह प्रार्थना आपकी सहायता करेगी कि आप यीशु के कार्य को स्वीकार करके अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकें। यह प्रार्थना मात्र एक मार्गदर्शिका है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं :

प्रिय प्रभु यीशु, आज मैंने समझा है कि आपने मेरे लिए क्रूस पर क्या किया था। आप मेरे लिए मारे गए! आपने अपना बहुमूल्य रक्त बहाया और मेरे पापों की कीमत चुकाई ताकि मुझे पापों की क्षमा मिले। बाइबल मुझे बताती है कि जो कोई आप में विश्वास करता है उसे उसको पापों की क्षमा मिलती है।

आज मैं आपमें विश्वास करने और जो कुछ आपने मेरे लिए किया है, उसको स्वीकार करने का फैसला करता हूँ, कि आप क्रूस पर मारे गए और फिर जीवित हो गए। मैं जानता हूँ कि मैं अपने आपको अच्छे कामों के द्वारा नहीं बचा सकता हूँ। मैं अपने पापों की क्षमा कमा नहीं सकता हूँ।

आज मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूँ और मुँह से कहता हूँ कि आप मेरे लिए मारे गए। आपने मेरे पापों का दण्ड चुकाया। आप मृतकों में से जीवित हो गए और आपमें विश्वास करने के द्वारा मैं अपने पापों की क्षमा और पाप से छुटकारा प्राप्त करता हूँ।

प्रभु यीशु धन्यवाद। मेरी सहायता करें कि मैं आपको प्रेम कर सकूँ। आपको और अधिक जान सकूँ और आपके प्रति विश्वासयोग्य रह सकूँ। आमीन!

नोट

नोट

नोट

हमारे जीवनों में कभी–कभी आशा के प्रतिकूल मोड़ आते हैं। हम अचानक अपने आपको तूफानों में घिरा हुआ पाते हैं। हम सब के जीवनों में सदैव चुनौतियाँ और संघर्ष होते हैं। कभी–कभी हम अपने आपको मार्ग के बिल्कुल अन्त में पाते हैं और नहीं जानते कि अब किधर मुड़ें।

आप बिल्कुल एक आशाहीन परिस्थिति के मध्य हो सकते हैं– आपकी नौकरी व्यवसाय, शिक्षा, घर, विवाह और परिवार आदि। आपके जीवन में बहुत सी बातें गलत होती जा रही हैं। मैं आपको उत्साहित करना चाहता हूँ कि बाइबल का परमेश्वर मृतक में जीवन डालने में विशेषज्ञ है–ऐसी परिस्थितियों में जो मृतक और आशाहीन प्रतीत होतीं हैं। वह आशाहीन परिस्थितियों को बदलने में विशेषज्ञ है। यदि वह आपकी ओर है तो आप निराशा में भी आशा कर सकते हैं।

उस समय भी जब सब कुछ आशाहीन प्रतीत हो, आप एक विजयी बनकर बाहर आ सकते हैं। यह पुस्तक हमारे समक्ष सरल शब्दों के साथ उत्साह लेकर आती है कि हम आशा न छोड़ें। परमेश्वर और उसके वचन में आशा लगाए रहें। आपके जीवन के लिए प्रभु ने जो कहा है उसे पुनः स्मरण करें। आशा न छोड़ें!

आशीष रायचूर

All Peoples Church & World Outreach
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617, +91-80-65970617
Email: contact@apcwo.org
Website: www.apcwo.org